ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-10* November- 2020
Innovation The Research Concept

प्राचीन भारत में विज्ञान एवं तकनीकी

Science and Technology in Ancient India

Paper Submission: 15/11/2020, Date of Acceptance: 26/11/2020, Date of Publication: 27/11/2020

उमेश चन्द
शोधार्थी
इतिहास विभाग,
शहीद मंगल पांडे
राजकीय महिला स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, माधवपुरम, मेरठ,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

जैसा की सर्वविदित है कि भारत देश प्रारम्भ से ही सभ्यता एवं संस्कृति के मामले में विश्व का पथप्रदर्शक रहा है तथा सम्पूर्ण प्राचीन भारतीय समकालीन सभ्यताओ ने भारत से बहुत कुछ सीखा जैसे अरबो के माध्यम से पश्चिमी देशो ने भारत से ज्ञान, विज्ञान, धातु कर्म, चिकित्सा ज्ञान, गणितीय गणनाऐ, खगोलीय ज्ञान, ज्योतिष, आदि को सीखा था। तथा उपरोक्त ज्ञान का प्रयोग करके वे देश अपने अस्तित्व को एक पहचान दे सके। इसलिए आज वो प्राचीन भारत में फलते फूलते विज्ञान के अस्तित्व को भारत से समाप्त करने का प्रयत्न करते रहे। जिसमें वो लगभग कुछ हद तक सफल भी रहे।

जिसका प्रभाव हमें इन बातो को सुनने व पढने से पता चलता है कि भारत एक पिछडा देश है जिसका अपना कोई प्राचीन वैज्ञानिक अस्तित्व नही है और भारत का ज्ञान एवं विज्ञान मात्र एक कल्पनाओ का ढकोसला है और कुछ नही तथा इसके द्वारा लिखे गये ग्रथों में वर्णित सभी बाते काल्पनिक है।

लेकिन ऐसा नही है मेरा देश भी एक किसी समय ज्ञान एवं विज्ञान का गढ रहा है। तथा जिसके ज्ञान एवं विज्ञान ने विश्व को बहुत कुछ दिया है। जिसका वर्णन इस शोध–पत्र के माध्यम से किया जायेगा।

As is well known, India has been a pioneer in the world in terms of civilization and culture since the beginning and the entire ancient Indian contemporary civilizations learned a lot from India like Western countries through Arbo learned knowledge, science, metallurgy, Medical knowledge, mathematical calculations, astronomical knowledge, astrology, etc. were learned. And by using the above knowledge, those countries were able to give an identity to their existence. Therefore today they kept trying to end the existence of the flourishing science in ancient India from India. In which he was also successful to some extent.

The effect of which we know from listening to and reading these things is that India is a backward country which has no ancient scientific existence of its own and the knowledge and science of India is just a hoax of imagination and nothing and described in the Graths written by it All things are imaginary.

But it is not the case that my country is also producing knowledge and science at some point. And whose knowledge and science has given a lot to the world. Which will be described through this paper.

मुख्य शब्द : वेद, ऋगवेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्वेद, विज्ञान, ज्ञान, भारत, महर्षि, गणित, खगोल, चिकित्सा विज्ञान, रसायन एवं भौतिक आदि।
Vedas, Rigveda, Yajurveda, Samveda, Atharveda, Science, Knowledge, India, Maharishi, Mathematics, Astronomy, Medical Sciences, Chemistry and Physics etc.

प्रस्तावना

इस शोध–पत्र के माध्यम से वेदों वर्णित इन मंत्रो का संहिताओ में वर्णित अर्थो के माध्यम से वैदिक युग मे निवास करने वाले भारतीय लोगो की उस विस्तृत सोच व वैज्ञानिक वास्तविकता से वर्तमान को परिचित कराना चाहता हॅू जिससे कि वर्तमान में रहने वाले वो भारतीय जो अपने प्राचीन विज्ञान में कोई रूची नही रखते है इस शोध–पत्र को पढकर वो वर्तमान की भौतिकता को त्यागकर उस सूक्ष्म ज्ञान एवं विज्ञान की तरफ आकर्षित हो । जिसने किसी सम्पूर्ण विश्व को अपने रंग से रंग दिया था। तथा उस समय जब सम्पूर्ण विश्व भारत को छोडकर एक अज्ञान के अंधेरे में जी रहा था। उस समय में देश में एक उच्च कोटि का विज्ञान पंख फैलाये अपने पथ पर आगे बढ रहा था। तथा

भविष्य के लिये विज्ञान के रास्ते तैयार कर रहा था। परन्तु जिसे स्थापित करने में वह असफल रहा ।

सूत्रो (मंत्रो) को शोध–पत्र के माध्यम से समझाने का प्रयत्न करूंगा।

इस शोध–पत्र का प्रारम्भ सामवेद में वर्णित एक श्लोक से करना चाहता हूँ। क्योंकि यह वह एक छोटा सा श्लोक है जिसकी व्याख्या के बाद प्रत्येक आम नागरिक जो पढा लिखा होगा समझ सकेगा। की वास्तव में इस शोध–पत्र में पढने को बहुत कुछ है।

श्लोक– और्वभृगुवच्छुचिमप्नवानवदा हुवे।

अग्नि समुद्र वाससम।। 8।। 1

सामवेद प्रथम अध्याय द्वितीय खण्ड श्लोक 8 में इस छोट से श्लोक का अर्थ है।

हे समुद्र में वास करने वाल अग्निदेव भृगु और अप्वान आदि ज्ञानी ऋषियों ने सच्चे मन से आपकी प्रार्थन की है। हम भी हृदय से आपकी स्तुती करते है।

उपरोक्त श्लोक में एक शब्द है ''अग्नि समुद्रवाससम'' यह शब्द प्राचीन कालीन मनुष्यों की उस वैज्ञानिक तर्कता को सिद्व करता है। जिसे वर्तमान के वैज्ञानिको ने कहा H2O जिसकी धारण 1766 में हेनरी केवेण्डिस ने प्राप्त की।..2 तथा O अर्थात आक्सीजन इसकी खोज 1772 में स्वीडन के वैज्ञानिक कार्ल विल्हेम शीले ने की थी। 3 2

H20 का निर्माण होता है यानि जल का H2O जल का रासायनिक सूत्र है। यहॉ पर हम पाते है कि जिन अग्निसील तत्वों यानि हाइड्रोजन और आक्सीजन के मिलने से जल का निर्माण होता है। वास्तव में वो विश्व को जलाकर राख कर देने वाली अग्नि के तत्व है।

उसी प्रकार हम लिखित सामवेद के श्लोक से यह सिद्व कर सकते है कि उस समय के ऋषि जिन्हे हम वर्तमान परिदृश्य के परिपेक्ष में वैज्ञानिक जल का निर्माण अग्नि तत्वों से होता है।

इसी तरह एक अन्य श्लोक में जो सामवेद से ही सम्बन्ध है में लिखा है।

कायमानोवना त्वं यन्मातृरजगन्नपः।
न तत्ते अग्ने पृमृषे निवर्तन यद् दूरे सन्निहाभुवः।।9।।...4

अर्थात

हे अग्ने आप पदार्थो के मूल घटकों को एकत्र करने में सक्षम हो। अतः आपने माता की तरह जो जल आदि द्रव्यों को जन्म दिया है। उसने हमे भृमित नही किया । क्योंकि आप अदृश्य होकर भी उनमे विद्यमान है।

अध्याय एक पंचम खण्ड श्लोक 9 सामवेद संहिता उपरोक्त श्लोक की अगर हम वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समीक्षा करे तो हम पाते है उस काल के ऋषियों को इस बात का ज्ञान था कि अग्नि के द्वारा हम ग्लनांक विधि से एक धातु को दूसरी धातु में मिश्रित कर सकते है तथा धातु के मूल रूप को अग्नि के माध्यम से शुद्व करके सच्चाी धातु को भी प्राप्त कर सकते है तथा इस श्लोक मं अंशत आइंस्टीन के $E=MC^2$ के नियम का बोध होता है ...5 जिसमें कहा गया है। पदार्थ और ऊर्जा एक ही चीज के दो अलग–अलग रूप है।पदार्थ ऊर्जा में और ऊर्जा पदार्थ में बदल सकती है तथा न तो ऊर्जा का नाश होता है और न ही ऊर्जा को उत्पन्न किया जा सकता है।ऊर्जा अदृश्य रूप में प्रत्येक पदार्थ में विद्यमान होती है।

सोलर सिस्टम की खोज निकोल कॉपरनिक्स ने की थी और यह धारण प्रतिपादित कि की पृथ्वी पर जीवन का आधार सूर्य है ।....6 और आज वर्तमान में सभी को यह बात ज्ञात है। लेकिन क्या आपको पता है वैदिक काल में भी इस नियम का पता हमारे ऋषियों का पता था। आओ चले निम्नलिखित श्लोक के माध्यम से हम इस बात को सिद्व करते है।

अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथ्वित्या अयम।
अपा रेता सि जिन्वति।। 2।।..7

अर्थात

हे अग्निदेव धुलोक के शीर्ष स्वरूप सर्वोच्च भाग में विद्यमान होकर जीवन का संचार करके धरती का पालन करते हुये जल में जीवन शक्ति का संचार करते है।

........3

यजुर्वेद संहिता तृतीय अध्याय श्लोक 12

जो पूर्णतः आधुनिक वैज्ञानिको और कॉपरनिक्स के सिद्वांतो से पहले पृथ्वी पर जीवन के लिये सूर्य की उपयुक्तता को सिद्व करते है। और हॉ आपको यह जानकर भी आश्चर्य और खुशी होगी कि विश्व में सबसे पहले पृथ्वी शब्द हमारे ऋषियों ने ही दिया था जो उपरोक्त श्लोक से सिद्व होता है।....8 तथा इस श्लोक की पुष्टि हम एक अन्य श्लोक से भी करते है जो निम्न प्रकार है । तथा इसे तो सभी जानते है।

तत्सवितुर्वरेण्यम भर्गो देवस्य धीमही।
धियों यो नः प्रचोदयात।।35।।...9

अर्थात

सम्पूर्ण जगत के जन्मदाता सविता(सूर्य) देवता की उत्कृष्ट ज्योति का हम ध्यान करते है। जो सत्कर्मो की तरफ हमारी बुद्वि को प्रसस्त करे।

यजुर्वेद संहिता अध्याय तीन श्लोक 35– में वर्णित उपरोक्त श्लोक ऋंग्वेद में पूर्ण श्लोक गायत्री मंत्र श्लोक का भी हिस्सा है।

उपरोक्तो श्लोको के अतिरिक्त ऋंगवेद में भी ऐसे अनेको श्लोको/मंत्रो का संग्रह है जो वर्तमान विज्ञान के सिद्वांतो को वर्तमान से पूर्व भूतकाल में सैकडों वर्ष पूर्व इन नियमो का प्रतिपादन कर चुके थे। ऐसा ही एक नियम है। VIBGYOR जिसकी खोज 1665ई0 में इसहाक न्यूटन ने की थी।....10 जिसमें सूर्य की रोशनी में सात रंगों की उपस्थिति को बताया गया था । परन्तु न्यूटन से बहुत वर्ष पूर्व 1500ई0पू0 में ऋषी प्रस्कष्व कष्व ने ऋंगवेद के प्रथम मंडल के सूक्त 50, श्लोक/मंत्र 9 में सूर्य में उपस्थित सप्त वर्णो का उल्लेख कर दिया था। जो निम्नलिखित है।

अयुक्त सप्त शुन्धुवः सूरो रथस्य नप्त्यः।
ताभिर्याति स्वयुक्ति मिः।।9।।....11

अर्थात

पवित्रता प्रदान करने वाले ज्ञान सम्पन्न अर्ध्वगामी सूर्यदेव अपने सप्त वर्ष अश्वों से (किरणों से) युक्त रथ पर शोभायन होते है।

उपरोक्त श्लोको में तो विज्ञान की भौतिक एंव रासायनिक शाखाओ का वर्तमान के वैज्ञानिको के सिद्वान्तों का वेदो में लिखित रचनाओ से व्याख्या की गई है। अब अपने देश की प्राचीन श्रेष्ठ वैज्ञानिकता में चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में वेदों के द्वारा प्रदान की गई जानकारी जो मंत्रो/श्लोको के माध्यम से दी गई है का वर्णन करेंगे।

वैसे तो चिकित्सा के क्षेत्र में प्राचीन भारतीय ज्ञान से बढकर विश्व में किसी भी देश के पास कोई ज्ञान नही है। यह तो विश्व के विद्वान भी मानते है। और विश्व प्रसिद्व वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टाइंन ने तो भारतीय ज्ञान और विज्ञान के सन्दर्भ में कहा है । प्रशंसा करते हए कि–.......4

''We owe a lot to the Indians, who taught us how to count without which no worthwhile scientific discovery could have been made ''

..........Albert Einstein....12

और आगे चलते हुये हम बात करते है। भारतीय चिकित्सा विज्ञान की जिसके चलते हमारे देश में महान चिकित्सक हुये जैसे धनवंतरी, चरक, सुश्रुत सुषेन आदि। और इनके जैसे अनेको चिकित्सा शस्त्रियों की वजह से हमारे देश में आयुर्वेद का विस्तार इतना अधिक हुआ कि आयुर्वेद को वेदो के सदृश्य पंचम वेद भी मान लिया गया।

लेकिन इस शोध–पत्र में सिर्फ वेदो में विज्ञान एवं तकनीकी पर चर्चा कर रहा हूँ अतः यहॉ पर अब चर्चा मात्र वेदो में चिकित्सा और विज्ञान, तकनीकी में ऋगवेद में चिकित्सा विज्ञान पर प्रकाश डालेंगे।

आयुर्वेद चिकित्सा में जंगली जडी बूटियों व रासायनिक भस्मों से उपचार के अलावा एक ऐसी पद्वती का भी वर्णन है जिसे वर्तमान में sun/heat थैरेपी कहते है और हमारे ऋंगवेद में इसका वर्णन मिलता है। जो निम्न प्रकार है ।

उधन्नध मित्रमह आरोहुन्नुत्तरा दिवम।
हद्रोगं मम सूर्य हरिमाणं च नाशय।।12।।

अर्थात

हे मित्रो के मित्र सूर्यदेव। आप उदित होकर आकाश में उठते हुये हृदयरोग, शरीर की कांती का हरण करने वाले रोगो का नष्ट करे।

ऋग्वेद संहिता सूक्त 50 श्लोक 12– इस मंत्र/श्लोक के माध्यम से हमे वैदिक काल में सूर्य के द्वारा उपचार करने का पता चलता है।

इतना ही नही हमारे प्राचीन ऋषियों को इस बात का भी ज्ञान था कि चन्द्रमा स्वंय की रोशनी से नही अपीतू सूर्य भगवान की रोशनी से चमकता है। जो निम्नलिखित श्लोक से पता चलता है।

अत्राहा गोरमन्वत नाम त्वष्टुरपीच्यम।
इत्था चन्द्रमसों ग्रहे।।15।।....13

अर्थात

मनिष्यिों ने त्वष्टा का दिव्यतेज, गतिमान, चन्द्रमण्डल में अनुभव किया ।

ऋंग्वेद संहित मण्डल प्रथम सूक्त 83 श्लोक 15–

चिकित्सा विज्ञान में जहॉ जहर को घातक बताया जाता है वही पर भरतीय चिकित्सा विज्ञान में सूर्य कि किरणों का प्रयोंग करके उसी जहर को जीवन दायनी संजीवनी भी बनाया जा सकता है जो कि वर्तमान विज्ञान में सूर्य द्वारा इस विधि व तकनीक का अभी तक नामों निशान तक नही है। 5

और निम्नलिखित श्लोक इस बात की पुष्टी करता हैः–
सूर्ये विषमा सजामि दृति सुरावतो गृहे।
सो चिन्नु न मराति नो वयं मरामरे अस्य योजनं हरिष्ठा मधुत्वा मधुला चकार।।10।।....14

ऋग्वेद संहिता प्रथम मंडल सूक्त 191 श्लोक 10–

अर्थात

आसव को जिस प्रकार पात्र में रखते है । उसी प्रकार हम सूर्य किरणों में विष को रखते है । इस विष से सूर्यदेव प्रभावित नही होते है। तथा हमारे लिये विशनिवारक सिद्व होते है। अश्वारूढ सूर्यदेव इस विष का निवारण करते हैं। तथा मधुला विधा इस विष को अमृत बना देती है। मृत्यु निवारक।

इतना ही नही हमारे ऋषियों/मुनियों को इस बात का भी ज्ञान था कि वर्षा किस प्रकार होती है। जैसे आधुनिक युग में हमे बताया गया कि सूर्य द्वारा जल के वाष्प बनकर,इकटठा होने पर बादलो द्वारा वर्षा कराई जाती है।

उसी प्रकार ऋंग्वेद के प्रथम खण्ड के सूक्त 22 के लोक/मंत्र 6 में इसी प्रकार वर्षा के होने का वर्णन है जो निम्न श्लोक/मंत्र द्वारा वर्णित है। जिसे ऋषि मेघातिथि काण्व ने रचा था।

अपां नपातमवसे सवितारमुप स्तुही।
तस्म व्रतान्युश्मसि ।।6।।.....15

अर्थात

हे ऋत्विज । आप हमारी रक्षा के लिये सविता देवता की स्तुति करे। हम उनके लिये सोमया गादि कर्म सम्पन्न करना चाहते है। वे सविता देव जलो को सुखाकर पुनः सहस्त्रों गुना बारसाने वाले है।

यहॉ तक तो इन शोध–पत्र मे उस ज्ञान विज्ञान की बात कही गयी है जो विज्ञान की उस शाखा में आता है। जिसे वैज्ञानिक धरातल पर बनाकर उसका प्रयोग धरातल पर करते है। अब इससे आगे हम वैदिक युग के ऋषियों मुनियो की उन अवधारणाओं का वर्णन करेंगे जिनमें उस वस्तु के होने का आभास होता है। जिन्हे वर्तमान में वायूयान कहा जाता हैं इसका वर्णन हमे ऋग्वेद के प्रथम मंडल के सूक्त 22 के श्लोक/मंत्र 2 से प्राप्त होता है।

या सुरा रथीतमोभा देवा दिविस्पृशा।
अश्विना ता हवा महें।।2।।.....16

अर्थात

ये दोनो अश्विनी कुमार सुसज्जित रथो से युक्त महान रथी है। ये आकाश में गमन करते है। इन दोनो का हम आव्हान करते है। 6

उपरोक्त इस श्लोक से हमे आकाश में उडने वाले यानो का आभास स्पष्ट रूप से प्राप्त होता है। क्योंकि मान्यता का होना उस युग/समय में उस चीज पूर्ण या आभासी रूप से होने का प्रमाण देती है।

इसके अतिरिक्त हमे तीव्र गति से चलने वाले यानो का भी आभास हमें इस श्लोक से पता चलता है जिसकी रचना ऋषि मेघातिथि काण्व ने की थी तथा जो ऋंग्वेद के प्रथम मण्डल के सूक्त 22 के श्लोक एवं मंत्र 4 से प्राप्त होता है । जो निम्नलिखित है।

नाहि वामस्ते पूरके यत्ता रथेन गच्छयः।
अश्नि सोमिनो गृहम।।4।।....17

अर्थात

हे अश्वनी कुमारो। आप रथ पर आरूढ होकर जिस मार्ग से जाते हो वहा से सोमया करने वाले याजक का घर दूर नही है।

उपरोक्त श्लोक से आभास होता है कि उस युग में भी ऐसे वायुयान होते होंगे जो तीव्रगति से चलने वाले होते थे। तथा वो कही भी किसी भी स्थान पर बिना हवाई पटट्ी के उतर सकते थे। जैसे की आजकल के हेलीकाप्टर आदि।....18

उपरोक्त लिखित मंत्रो एवं श्लोको में जो भी वर्णन किया गया है । वह हमारे प्राचीन ज्ञान–विज्ञान की झलक हमे अवश्य दिखाता है। पर हम इन्हे मानने से इन्कार करते है। हमारे इन वेदों को पश्चिम के एक देश ने माना और वह इस वेद की मूल प्रति को उठाकर अपने देश ले गया। और आज भी उस पर उस देश की वैज्ञानिक संस्था शोध कर रही है। वह देश है जर्मनी और वेद है ऋंग्वेद। अतः पश्चिम को श्रेष्ठ करने वालो पहले अपने आप को समझो, अपने देश को समझो और वेदो की ओर लौटो तो आपको सब समझ आ जायेगा। कई बार हमे हमारे देश के नागरिको सहित विदेशियों से कई बार सुनने को मिलता है कि भारत में अंको का प्रयोग एवं प्रचलन विस्तृत रूप से बहुत बाद में हुआ था । लेकिन यहॉ पर ऋंग्वेद में वर्णित एक श्लोक उन लोगो कि बातो को झूठा साबित करता है और बताता है । भारत में इनका (अंको) का प्रयोग आदि काल वैदिक युग से ही प्रयोग में है।

इस बात को सिद्व करने के लिऐ अंको के प्रयोग से संबंधित श्लोक निम्नलिखित हैः–

गायन्ति त्वा गायत्रिणों र्चन्त्यर्कमर्किण।
बहामणस्त्वा शतकत उद्वशमिव येमिरे।। 10।।....19
ऋंग्वेद संहिता प्रथम मंडल सूक्त 10 श्लोक।

अर्थात

हे शतकतो (सौ यज्ञ करने वाले) इन्द्रदेव। उदगातागण आपका आव्हान करते है। स्तोतागण पूजा इन्द्रदेव का आदर करते है। बॉस के ऊपर कला करने वाले नट क समान बहम नाम ऋत्विज श्रेष्ट स्तुतियों द्वारा इन्द्रदेव को प्रोत्साहित करते है।

उपरोक्त श्लोक में शत अर्थात सौ का प्रयोग होना इस बात का प्रमाण है कि वैदिक युग मे भी हमारे ऋषियों मुनियों को अंको का ज्ञान था।........7

इन संख्याओ के प्रयोग के अलावा ऋंग्वेद में दो ऐसे श्लोक भी है। जो यह बताते है कि उस समय मनुष्य के पास अंतरिक्ष, आकाश और जल के अंदर गमन करने वाले बहुत तीव्र गति से चलने वाले यान भी उपलब्ध थे। इसी प्रकार इस बात को सही (सिद्व करने हेतू कुछ श्लोक निम्नलिखित है।

वीलुपत्मभिशुहेमभिर्वा देवाना वा जूतिभिः शाशदाना।
तद्दा सभो नासात्या सहस्त्रमाजा यमस्य प्रधने जिगाय।।2।।....20
ऋंग्वेद प्रथम मंडल सूक्त 116 श्लोक 2

अर्थात

हे सत्ययुक्त अश्विनकुमारो । आप दोनो अति वेग हो। आकाश में उडने वाले तीव्र गति से जाने वाले देवताओं की गति पे चलने वाले यानो से भी तीव्र गमनशील है। आपको मार्ग से संयुक्त हुऐ समय ते यम को आन्दित करने वाले युद्व में हजारो की संख्या वाले शत्रु सैनिको पर विजय प्राप्त की।

इस श्लोक में ऋषी कक्षीवान दैर्घतमस (औशिज) ने तीव्र गति से चलने वाले यानो का उल्लेख किया है। अब एक अन्य श्लोक में हम जानेंगे जिसमें समुद्र के अंदर चलने वाली पंडुब्बी व अंतरिक्ष में चलने वाले विमानों के बारे में

श्लोक तुग्रो ह भुज्युमश्विनोदमेघें रयिं न कश्चिन्ममृवॉ आवाहः।
तमुहधुनौ भिरात्मान्वती भिरन्तरिक्षप्रद्विरपोदकाभिः।।3।।.......21
ऋंग्वेद संहिता प्रथम मंडल सूक्त 116 श्लोक 3

अर्थात

जैसे मरणासन व्यक्ति सभी इच्छाओं का त्याग कर देता है उसी प्रकार अपने पुत्र की इच्छा का त्याग करके तुग्र नरेश ने अपने भुज्य नामक पुत्र को शत्रुपक्ष पर आक्रमण करने हुऐ गम्भीर सागर में प्रवेश करने की आज्ञा दी। उसे आप दोनो अपनी सामर्थ्य द्वारा अंतरिक्ष यानो तथा पनडुब्बियों के सहयोग से निकाल कर उसके पिता के समीप ले गये।

उपरोक्त श्लोक में उस समय भी पनडुब्बियों के होने का बोध होता है।

इसी प्रकार इस श्लोक में तीव्रवेग से चलने वाले तीन यानो का वर्णन मिलता है जो निम्नलिखित है।

तिस्त्रः क्षपस्त्रिरहातिव्रजद्विर्नासत्या भुज्युमूह्थुः पतग्डैः।
समुद्रस्य धन्वन्नार्दस्य परेत्रिभी रथैः शतपद्वि षलश्वैः।।4।।.......22
..........8
ऋंग्वेद प्रथम मंडल सूक्त 116 श्लोक 4

अर्थात

हे सत्य से युक्त अश्विनी कुमारो। अति गहन सागर से दूर जहॉ मरूस्थल है। वहा से तीन दिवस और तीन रात्रि निरंतर चलते हुऐ अतिवेग से गमनशील सौ चक्रो छः अश्वो (अश्वशक्ति) सम्पन्न यंत्रों वाले, पक्षी के समान आकाश मार्ग से जाते हुए तीन यानो द्वारा आप दोनो ने भुज्य को उसके निवास पर पहुॅचाया ।

इस श्लोक में विज्ञान की चमत्कारिक व्याख्या के साथ हम उस समय की तकनीकी/ प्रौद्योगिकी का दर्शन भी करते है । जैसे 6 अश्वो (अश्वशक्ति) से सम्पन्न याने के होने से पता चलता है वे लोग प्रौद्योगिकी में कितने विकसित थे। क्योंकि 6 अश्वशक्ति (HP) से चलाने वाले वाहन दर्शाते है कि वो कम से कम ईंधन का प्रयोग करके उच्च क्षमता की ऊर्जा प्राप्त कर लेते थे। क्योंकि एक

हवाई जहाज जो वर्तमान काल है वो भी 400 HP में (300KW) ऊर्जा उत्पन्न होती है। जो उसे लगभग 1000 km/hour की रफ्तार देता है। 23
तब हवाई जहाज उडता है। तथा उसका औसत 4 लीटर प्रति सेकण्ड आता है अर्थात एक घण्टे में एक हवाई 240 लीटर ईधन खा जाता है। और 1 HP=1.373 KW की ऊर्जा जनरेट करता है। 24

अब अगर हम प्राचीन किताब की विज्ञान की बात करें तो उनका तीव्र गति से उडने वाला यान 6 अश्वशक्ति यानी 7.998 KW की ऊर्जा से चलता था । यानी उनका ईधन या तो हमारे ईधन से अलग रहा हो या उनकी तकनीकी इंजन बनाने की हमसे श्रेष्ट हो तभी 6 HP हवाई जहाज उडाना सम्भव हैं। क्योंकि 125 सी0सी0 की बाइक भी 3.45 HP से चलती है।.......25 फिर वो कैसे 6 HP से हवाई जहाज उडा लेते थे। है ना आश्चर्य की बात। और यह बात यहॉ आकर सिद्व हो जाती है कि वर्तमान में मनुष्य ओर विज्ञान कितना भी आधुनिक और विकसित क्यों न हो गया हो फिर भी वह वैदिक ज्ञान और विज्ञान से बहुत दूर है।

मंगल यान के समय अफवाह उडी थी कि मंगल यान को स्पेस में भेजने के लिए जब सभी कोशिशे निरर्थक हो रही थी। तब इसरो ने देश के जाने माने वैदिक गणित विशेषज्ञ और वर्तमान के हिन्दू धर्म के शंकराचार्य से सहायता मांगी थी। यह बात कहा तक सच है और कहा तक झूठ यह तो इसरो जाने। क्योंकि यह एक शोध–पत्र है। अतः यहा तथ्यों का संकलन है । अफवाहो का नही । फिर भी हम कह सकते है। अक्सर धुँआ वही से उठता है जहॉ पर आग लगी होती है।

मेरा तो बस यही मानना,कहना और कार्य है कि मुझे अपने प्राचीन ज्ञान और विज्ञान को लोगो तक पहुॅचाना है। और स्वंय को इससे अच्छी तरह से परिचित कराना है। अब हम प्राचीन वैदिक कालीन प्रचलित चिकित्सा विद्या/विज्ञान पर प्रकाश डालेंगे। किस तरह सपेरो का देश कहे जाने वाले भारत में विज्ञान के साथ–साथ चिकित्सा विज्ञान भी अपने चरम पर था। तथा उस चिकित्सा विज्ञान में शल्य चिकित्सा अर्थात सर्जरी की तकनीक होती थी। यह इन श्लोको के माध्यम से उनका वर्णन किया जा रहा है। 9

श्लोक

आस्नोवृकस्य वार्तिकामभीके युवं नरा नासात्यामुमुक्तम।
उतो कविं पुरूभुजा युवं ह कृपमाणम कृणुतं विचक्षे।।4।।....26

ऋंग्वेद प्रथम मंडल सूक्त 116 श्लोक 14

अर्थात

हे सत्य से युक्त अश्विनीकुमारो आप दोनो ने उपयुक्त बेला में भेडियों के मुख से चिडिया को मुक्त किया है भोजन द्वारा असंख्यों के पालक दृढ निश्चय के सहित प्रार्थना करने पर आप दोनो ने कृपा पूर्वक एक नेत्रहीन कवि को श्रेष्ट दर्शन हेतू दृष्टि प्रदान की । उपरोक्त श्लोक/मंत्र की व्याख्या से पता चलता है कि उस समय में भी चिकित्सा विज्ञान में भी शल्य चिकित्सा में नेत्र की दृष्टि को शल्य चिकित्सा द्वारा उपचारित किया जा सकता था। शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में विस्तृत अध्ध्यन के लिये हम कुछ ओर श्लोको का अध्ययन करेंगे। जिनमे शल्य चिकित्सा के द्वारा मनुष्य को कृत्रिम अंगो से उपचारित करके उनकी विकलांगता को दूर करने का प्रयास किया गया था । जो निम्न प्रकार हैः–

श्लोक

चरित्रं हि वेरिवाच्छेदि पर्णमाजा खेलस्य परितक्म्यायाम ।
सद्यो जडन्घामायसीं विश्पलोये धने हिते सर्तवे प्रत्यधत्तम।।15।।....27

ऋंग्वेद संहिता प्रथम मण्डल सूक्त 116 श्लोक 15

अर्थात

जिस प्रकार पंक्षी का पर गिर जाता है वैसे ही खेल राजा से सम्बन्धित विश्पला स्त्री का पैर युद्व में कट गया था । ऐसे रात्रिकाल में ही विश्पला को युद्व प्रारम्भ होने के पश्चात आक्रमण करने के लिये लोहे की जांघ आप दोनो ने लगाकर तैयार किया । ऐसे ही एक अन्य श्लोक जो निम्नलिखित है में नेत्रो की शल्य चिकित्सा का वर्णन मिलता है।

श्लोक

शतं मेषान्वृक्ये चक्षदानभृज्नाश्वं तं पितांधं चकार।
तस्मा अक्षी नासत्या विचक्ष आधत्तं दस्त्रा भिषाजावननर्वन।।16।।....28

ऋंग्वेद संहिता प्रथम मण्डल सूक्त 116 श्लोक 16

अर्थात

ऋजाश्व ने अपने पिता की सौ भेडो को भेडियो के भक्षण हेतू छोडने का अपराध किया । दण्ड स्वरूप उसके पिता ने उसे नेत्रहीन कर दिया । हे असत्य रहित अश्विनीकुमारो उन नेत्रहीन को कभी खराब न होनी वाली नेत्र देकर आपने उसकी दृष्टिहीनता के दोष को दूर किया ।..........10

इन श्लोको के माध्यम से पता चलता है कि प्राचीन वैदिक सभ्यता में यदि शरीर का कोई भाग खराब हो जाता था तो उस अंग को कृत्रिम अंग लगाकर ठीक किया जा सकता था। जैसेः– श्लोक 15 में विश्पला को लोहे की जांघ लगाकर युद्व के लिए तैयार करना दर्शाता है कि उनकी चिकित्सा पद्वति एवं तकनीकी ज्ञान कितना उच्च था कि मात्र एक रात्रि में ही कृत्रिम अंग को वास्तविक अंग से जोड दिया गया।

जबकि वर्तमान काल में अगर शल्य चिकित्सा द्वारा कोई कृत्रिम अंग रोपित किया जाता है तो उसे वास्तविक अंग से जुडकर कार्य करने में लगभग छः माह से लेकर 18 माह तक का समय लगता है जबकि उस युग मे मात्र एक रात में ही कृत्रिम अंग को वास्तविक अंग से जोड दिया गया। कितना आश्चर्य की बात है ?

अब हम श्लोक 16 के वर्णन में पाते है कि ऋजाश्व के नेत्रहीन होने पर उन्हे कृत्रिम आंख जो कभी खराब न हो प्रदान की गयी तथा ऋजाश्व को दृष्टि प्रदान की तथा आज के आधुनिक समय में भी इस प्रकार के नेत्र दोष को दूर करने की तकनीकी का विकास नही हुआ है। फिर उस समय में कैसे सम्भव कैसे था कि एक कृत्रिम आंख को किस प्रकार से स्थापित किया जाये। तथा उसके बारिक तंत्रो या कृत्रिम मांस पेशियों को दिमांग से कैसे स्थापित किया जाये। जिससे कि वह

कृत्रिम आंख वास्तविक नेत्र की भांति वस्तु को देखकर उसकी छाया को मस्तिष्क तक प्रक्षेपित करे। और मस्तिष्क उसका विश्लेषण करे और फिर समझे कि वह वस्तु क्या है।

यह तो एक प्रकार से ऐसा प्रतीत होता है कि महान अश्विनीकुमारो ने कृत्रिम आंख के साथ–साथ एक कृत्रिम दिमांग भी बनाया हो जो उस चिकित्सा पद्वति को पूर्ण कर सके । जैसे वर्तमान में आर्टिफिशियल इंटेलीजेंसी यानि आभासी समझ जो वर्तमान में वैज्ञानिक रोबोट आदि में प्रयोग करते है जिसका प्रयोग आधुनिक वैज्ञानिक सुपर कम्प्यूटर की सहायता से कर पाये है। वो भी पूर्ण रूप से नही बल्कि आंशिक रूप से।

फिर उस काल में यह किस प्रकार सम्भव हुआ । क्या यह शोध और आश्चर्य का विषय नही है। या हम कहे उस समय में भी कम्प्यूटर जैसी कोई चीज थी जो उन्हें ऐसा कार्य करने में सहायता प्रदान करती थी। ये तो आगे इन वेदों और इनके सहायक ग्रंथो के अध्ययन और इन पर होने वाले शोध कार्यो से ही जानकारी प्राप्त होनी सम्भव है।

चूंकि हमारे वेदो और ग्रंथो में अश्विनी कुमारो को चिकित्सा विज्ञान का श्रेष्ट ज्ञाता माना जाता है और वो चिकित्सा शास्त्र में शल्य चिकित्सा, औषध विज्ञान मे मनुष्य मात्र के वैद्य नही थे। अपितु अश्विनी कुमार पशओं के भी वैद्य थे। और उन्होंने अपने चिकित्सा ज्ञान की वजह से बहुत से पशुओ का उपचार भी किया था। जिसके संदर्भ में उन्हे यह महत्वपूर्ण ज्ञान महर्षि दधिचि जी ने प्रदान किया था। जिसका ज्ञान हमें निम्नलिखित श्लोक के माध्यम से प्राप्त होता है।

श्लोक

आथार्वणायाश्विना दधीचेश्व्यं शिरः प्रत्येश्यतम।
स वां मधु प्र वोचदृतायन्त्वाष्ट्र यदस्त्रावपिकक्ष्यं वाम।।22।।....29.........11

ऋग्वेद संहिता प्रथम मंडल सूक्त 117 श्लोक 22

अर्थात

हे शत्रु संहारक अश्विनी कुमारो । अथर्वकुल में उत्पन्न दधिचि के अश्व का सिर आप दोनो ने लगाया तब उस ऋषि ने यज्ञ मार्ग को प्रसारित करते हुए आप दोनो को मधुविद्या का उपदेश दिया तथा आप दोनो को अंगो को जोड देने की विद्या सिखाई ।

अतः उक्त श्लोको से हमे ज्ञान होता है कि अश्वनी कुमारो को यह शिक्षा महर्षि दधिचि जी ने प्रदान की थी । अश्विनी कुमारो को मनुष्य के उपचार के अलावा पशुओ के उपचार का ज्ञान निम्नलिखित श्लोक से पता चलता है। जो निम्नलिखित है–

श्लोक

अधेनुं दस्त्रा स्तर्य विषक्तामपिन्वत शयवे अश्विनागाम ।
युवं शचीभिर्विमदाय जाया न्यूहथुः पुरूमित्रस्य योषाम।।20।।....30

ऋग्वेद संहिता प्रथम मंडल सूक्त 117 श्लोक 20

अर्थात

हे शत्रुनाशक अश्विनी कुमारो गर्भ धारण करने में असमर्थ, दुर्बल, दुग्धरहित गाय को शयु ऋषि के कल्याणार्थ आप दोनो ने दुधारू बना दिया । पुरू मित्र की पुत्री को विमद के लिये धर्मपत्नी के रूप में आप ने ही अपने सामर्थ्य से दिलवाया ।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध–पत्र का एकमात्र उद्वेश्य अपने वेदो और शास्त्रों में छुपे उस ज्ञान एवं विज्ञान को समझना एवं समझाना है । जिसे सब मिथक कहते है। काल्पनिक समझते है। जबकि जिसकी सच्चाई से प्रेरित होकर नासा जैसी ऐजेंसी कवांटम थ्योरी पर गहन सूक्ष्म अध्ययन के लिये अपने 122 वैज्ञानिक मात्र महर्षि कणाद के वैश्विक दर्शन के अध्ययन एवं उसे समझने पर लगाता है।

फिर हम इसके लिये कार्य क्यो नही करते है। बस इसी बात को समझाते हुऐ देश के प्राचीन ज्ञान एवं विज्ञान को समझना है और समझाना है। 12

निष्कर्ष

अतः उपरोक्तो श्लोको से ज्ञान होता है कि महान चिकित्सक अश्वनी कुमार दोनो चिकित्सा के क्षेत्र में श्रेष्ठ विद्वान थे जिन्हे चिकित्सा के प्रत्येंक क्षेत्र का विशद ज्ञान था। यही है हमारा प्राचीन ज्ञान का कुछ अंशमात्र विवरण तथा इसी प्रकार हमारे समस्त ग्रंथ हमारे प्राचीन ज्ञान और विज्ञान से भरे पडे है। जो हमे अपने ऊपर गर्व करने का अवसर प्रदान करते है कि हम पिछडे नही है हमारा विज्ञान विश्व मे सर्वश्रेष्ठ था और है। और हम इसी के माध्यम से अपना पुराना स्वरूप विश्व गुरू भारत को प्राप्त कर सकते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *सामवेद प्रथम अध्याय द्वितीय खण्ड श्लोक 8*
2. *Wikipedia.org*
3. *Hindigyan book.com/internet*
4. *सामवेद संहिता अध्याय एक पंचम खण्ड श्लोक 9*
5. *Navbharattimes.indiatimes.com may 4 2012*
6. *Vocal.in*
7. *यजुर्वेद संहिता तृतीय अध्याय श्लोक 12*
8. *बही*
9. *यजुर्वेद संहिता तृतीय अध्याय श्लोक 8*
10. *Wikipedia.org*
11. *ऋग्वेद प्रथम मंडल सूक्त 50 मंत्र 9*
12. *Internet.bumpy.com/scrollroll.com*
13. *ऋग्वेद संहिता मंडल प्रथम सूक्त 83 श्लोक 15*
14. *ऋग्वेद संहिता मंडल प्रथम सूक्त 191 श्लोक 10*
15. *ऋग्वेद संहिता मंडल प्रथम सूक्त 22 श्लोक 6*
16. *ऋग्वेद संहिता मंडल प्रथम सूक्त 22 श्लोक 2*
17. *ऋग्वेद संहिता मंडल प्रथम सूक्त 22 श्लोक 4*
18. *प्रतियोगिता दर्पण feb-2018 पृष्ठ 8*
19. *ऋग्वेद संहिता प्रथम मण्डल सूक्त 10 श्लोक 1*
20. *ऋग्वेद संहिता प्रथम मण्डल सूक्त 116 श्लोक 2*
21. *ऋग्वेद संहिता प्रथम मण्डल सूक्त 116 श्लोक 3*
22. *ऋग्वेद संहिता प्रथम मण्डल सूक्त 116 श्लोक 4*
23. *M.Patrika.org/internet*
24. *Wikipedia.org*
25. *www.simetric .co.uk/internet*
26. *ऋग्वेद संहिता प्रथम मण्डल सूक्त 116 श्लोक 14*
27. *ऋग्वेद संहिता प्रथम मण्डल सूक्त 116 श्लोक 15*
28. *ऋग्वेद संहिता प्रथम मण्डल सूक्त 116 श्लोक 16*
29. *ऋग्वेद संहिता प्रथम मण्डल सूक्त 117 श्लोक 22*
30. *ऋग्वेद संहिता प्रथम मण्डल सूक्त 117 श्लोक 20*